मेरी जीवन यात्रा

• श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

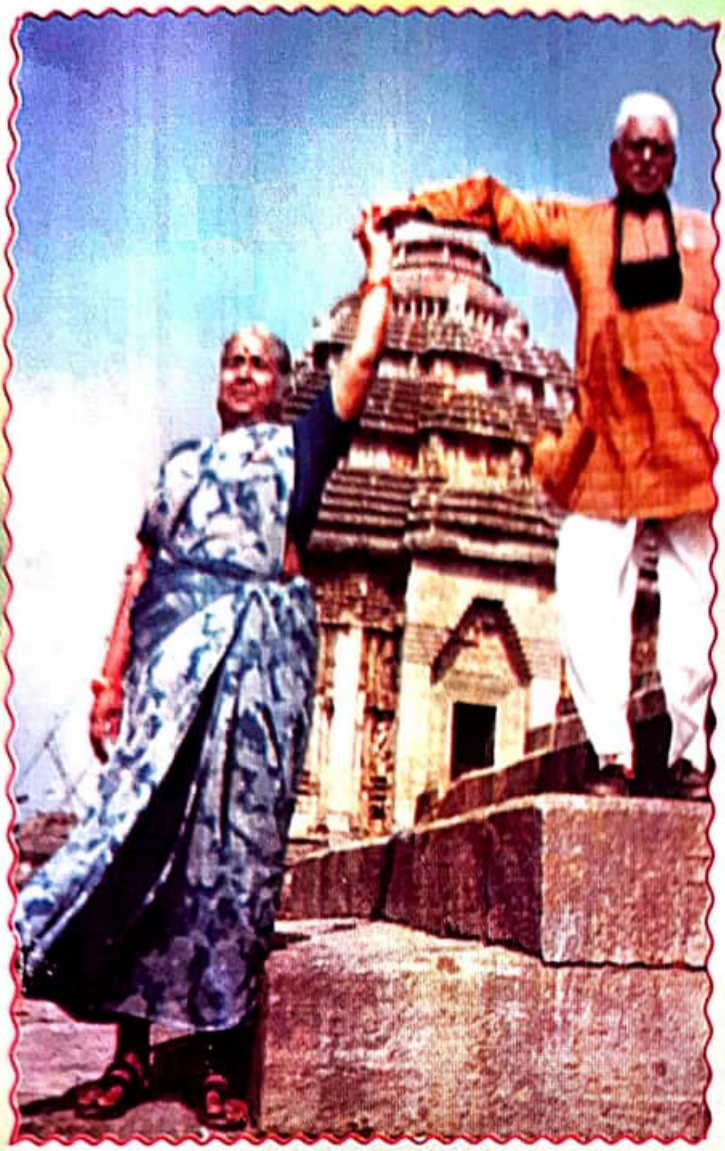

कोणार्क सूर्य मन्दिर
देखते हुए हम लोग

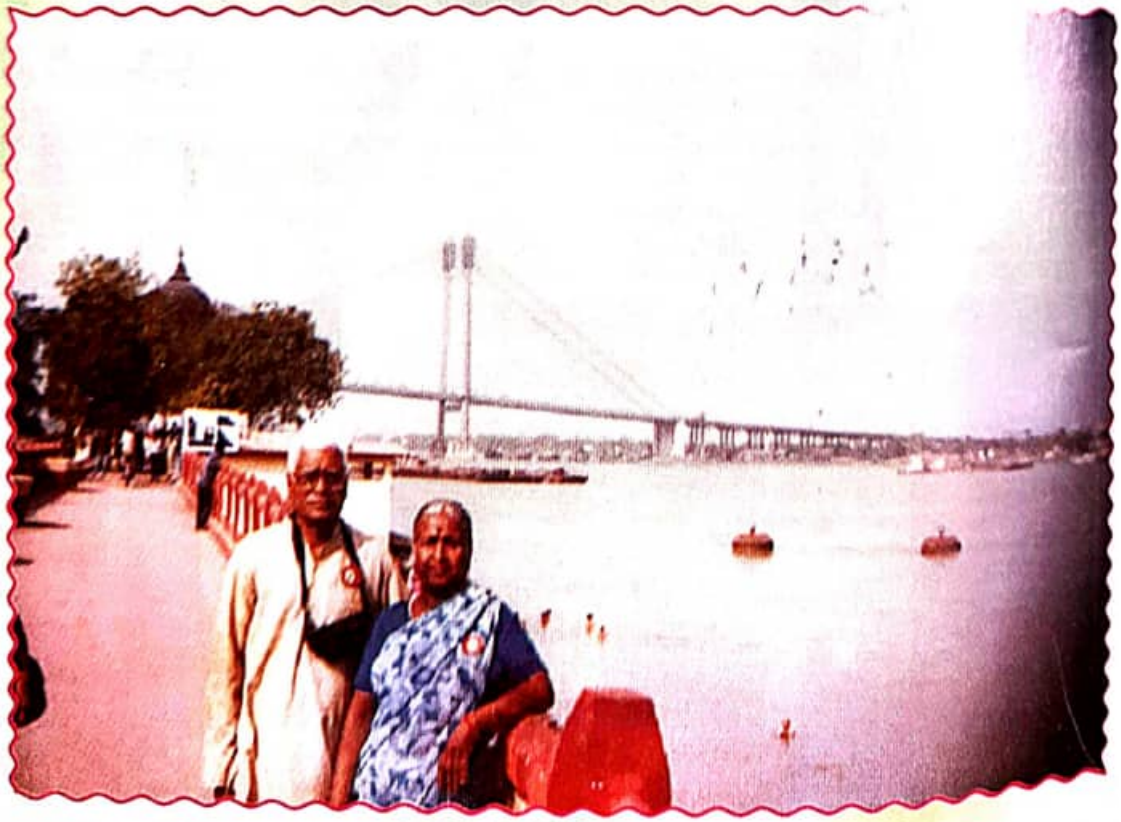

कलकत्ता का हाबड़ा ब्रिज
घूमते हुए हम दोनों

मेरी जीवन यात्रा

लेखिका

श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

प्रथम संस्करण : 2019

नवसंवत्सर : 2076

सम्पादक : रजनी खरया

सह-सम्पादक : अभिलाष बरसैंया

प्रकाशक : खरे प्रिंटर्स, 64, दुर्गा चौक, तलैया, भोपाल

मो. : 9425301959

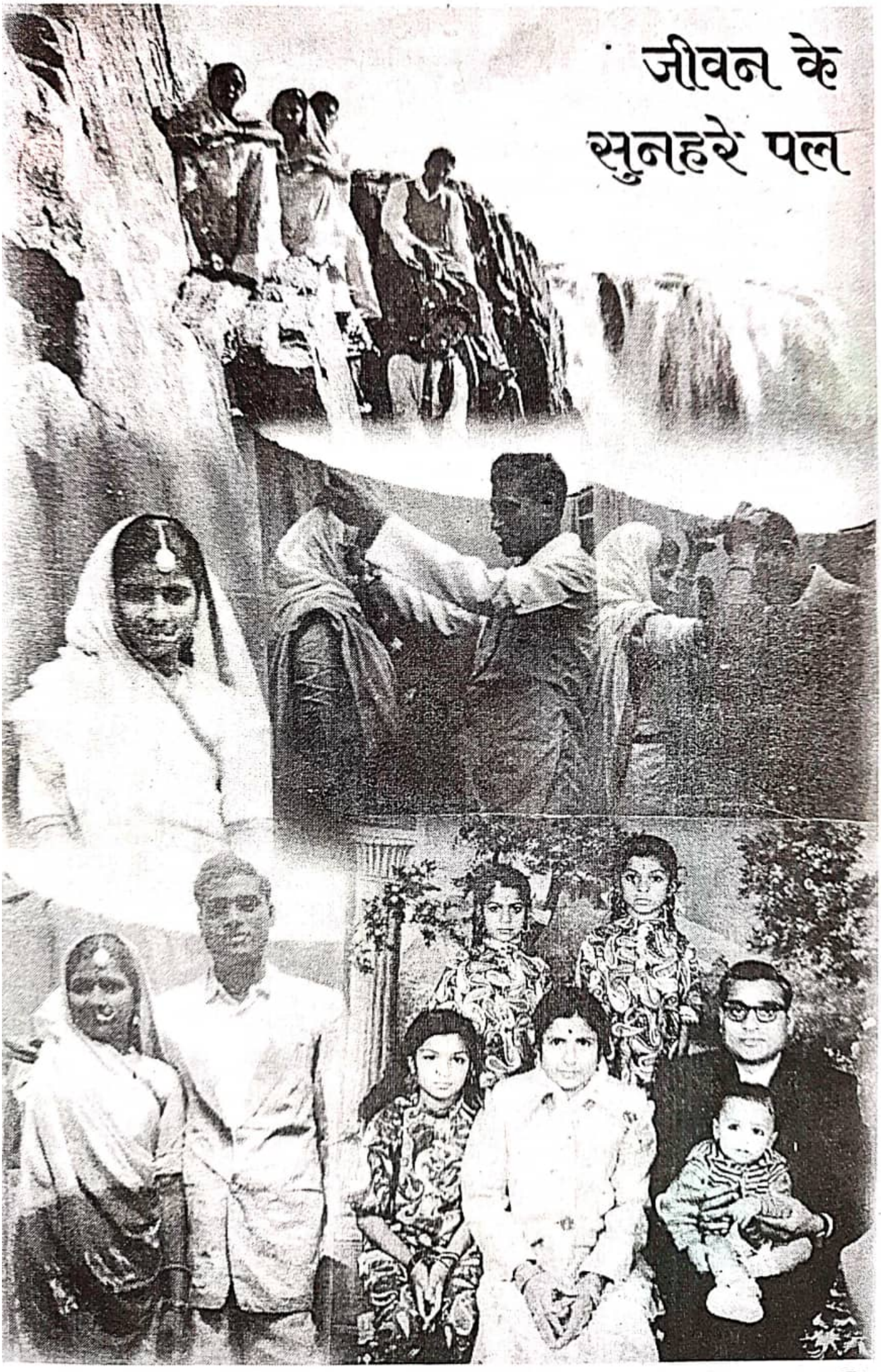

जीवन के
सुनहरे पल

अनुक्रमाणिका

स.क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	मेरी जीवन यात्रा	9
1.	मेरा बचपन, परिवार एवं शिक्षा	10
2.	विवाह	10
3.	इनकी पी.एच.डी.	11
4.	प्रथम बेटी रश्मि का आगमन	11
5.	दूसरी बेटी मंजू का जन्म	12
6.	मेरी ज़िद्दी बीमारी एवं परिवार का सहयोग	13
7.	इनका पहला भाषण बालि	13
8.	तीसरी बेटी रीता का जन्म	14
9.	मेरे और मेरे बच्चों के लिये परिवार का सहयोग	14
10.	बेटियों के बचपन के किस्से	15
11.	इनके लेखन की साधना	19
12.	डॉग का पालना	19
13.	पारिवारिक चर्चाएं	20
14.	राजगढ़ स्थानान्तरण	25
15.	पुत्र रत्न की प्राप्ति	28
16.	टीकमगढ़ स्थानान्तरण	29
17.	दीदी की अस्वस्थता एवं निधन	32
18.	इनका प्राचार्य के रूप में सेवाकाल	58
19.	पोता-पोती का आगमन अपूर्वा-सुयश	60
20.	हमारी तीन धाम की तीर्थ यात्रा	64
21.	पोता-पोतियों का आगमन अनन्या-उत्कर्ष	70
22.	उत्तराखण्ड की सुखद तीर्थ यात्रा	80
23.	इनका 80वां जन्मदिन	104
24.	इनका 81वां जन्मदिन	105
25.	इनका लेखन कार्य	106
24.	इनके अभिनन्दन ग्रंथ का लोकार्पण - ईसुरी पुरस्कार	106

।। श्री गणेशाय नमः ।।

मेरी जीवन यात्रा

'याद आये वे विशेष क्षण'
जो आज भी स्मृति पटल पर अंकित हैं।

मैं कोशिश कर रही हूँ कि अपने जीवन के वे सुनहरे पलों को रिवर्स करके दौड़ कर पकड़ूं। फिर नये सिरे से लिखना चालू करूं।

यादों के झरोखों में,
मैंने झांका है बार-बार,
अब कलम उठी है तो,
नहीं रोकूंगी इस बार।

हरिद्वार में गंगा जी की लहरों में आनंद लेते हम दोनों

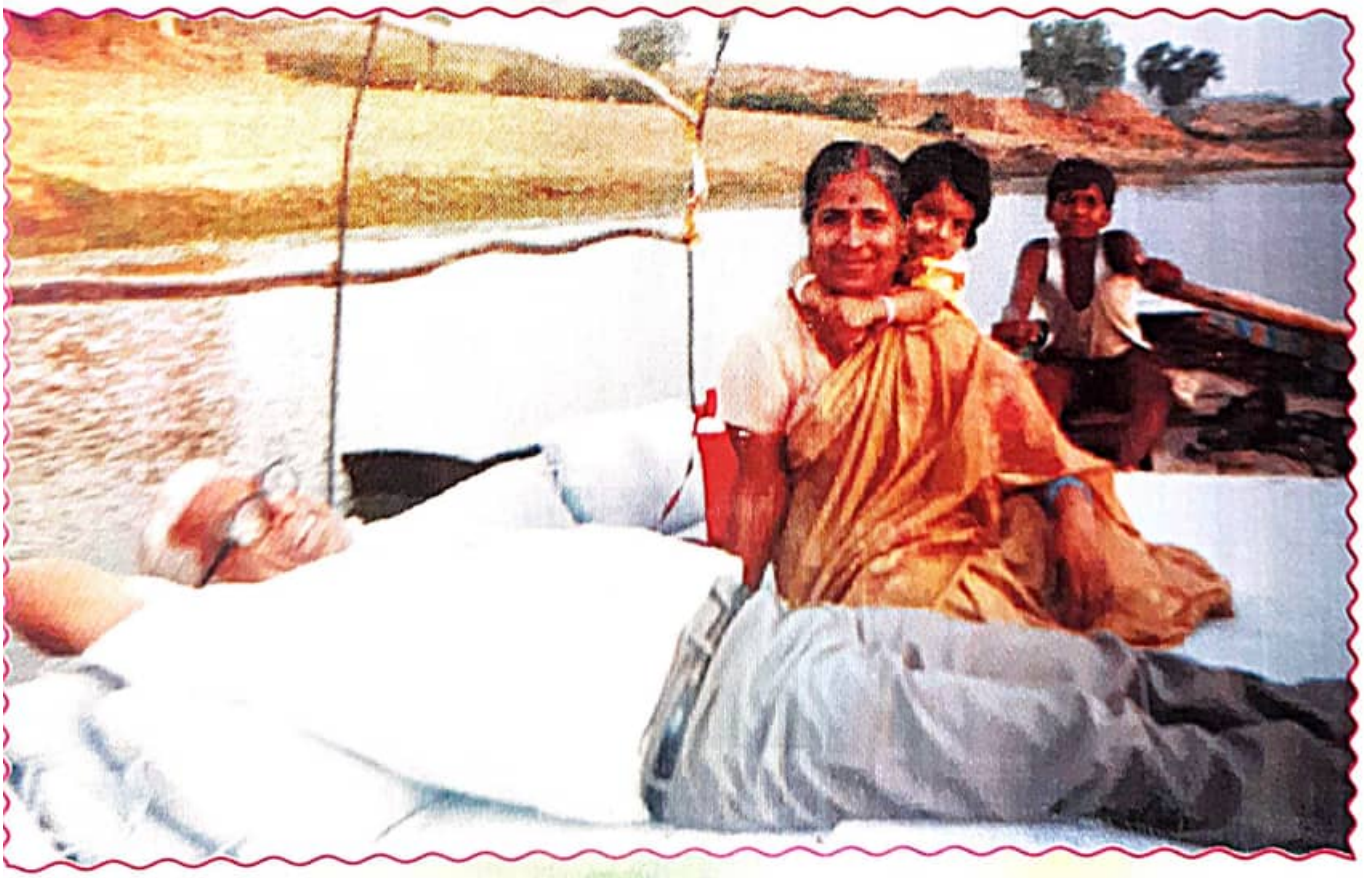

चित्रकूट में मंदाकिनी नदी में, नाव में मनोरंजन के सुनहरे
पलों का आनंद लेते हम दोनों

उत्तराखण्ड की 'चार धाम'
की यात्रा 'समूह' में

तीर्थ यात्रा के सभी साथी